भाषाभूषण और रसिकमोहन ।

ये दोनो ग्रन्थ १६५ वर्ष प्राचीन कवियो के बनाये हुए हैं। इनको स्वर्गवासी पण्डित मन्नालाल ने काव्यरसिको के हेतु छपवाया था ।

स्वर्गवासी बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने पुनः संशोधित किया ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस मे मुद्रित और प्रकाशित ।

सन १९०७ ई० ।

दूसरी बार १०००]

[मूल्य ॥)